ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के मानविकी संकाय की हिंदी विषयक
पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

प्रस्तावित विषय :

"दया प्रकाश सिन्हा के नाटको में युगबोध"

शोध निर्देशिका :

डा० रीता दुबे
सहायक प्राध्यापक
सी० एम० कॉलेज, हिंदी विभाग
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी :

एकता प्रियदर्शिनी
पिता- उदय प्रकाश
ग्राम- मनियरवा, पो०+थाना- खजौली
जिला- मधुबनी
पैट क्रमांक- E2209058

प्रस्तावित शोध-विषय–

दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में युगबोध

प्रस्तावना–

नाटक एक दृश्य-श्रव्य विधा है। नाटक में रचनाकार, अभिनेता और सामाजिक (दर्शक) सभी की भूमिका होती है। नाटककार नाटक की रचना केवल पढ़ने के निमित्त से नहीं करता, उसकी दृष्टि में अभिनय भी महत्त्वपूर्ण रहता है। 'नाटक' अन्य साहित्यिक विधाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि इसमें समाज को, मनुष्य को जागृत करने की बड़ी शक्ति होती है। इसलिए अनेक नाट्य-संस्थाओं और नाट्य-मंडलियों की स्थापना कर नाटकों को खेला जाता है। नाटकों का उद्देश्य, मनोरंजन प्रदान करना मात्र न होकर समाज के प्रत्येक समूह को शिक्षित करना, सामजिक व्यवस्थाओं की जानकारी देना तथा सामाजिक त्रासदी और विसंगतियों को उजागर करना भी रहा है।

भारतेंदु युग से ही नाट्य विधा राष्ट्रीय जागरण के लक्ष्य को लेकर चली है। जयशंकर प्रसाद ने तो इसे ऐतिहासिकता का रोचक संबंध देकर भारत की गौरव-गाथा को स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। ऐसे अद्वितीय नाटककारों की परंपरा का विकास दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में दिखाई पड़ता है। दया प्रकाश सिन्हा साठोत्तरी युग के नाटककार हैं। इतिहास, राष्ट्रीयता और सामाजिक विषमताओं इन तीनों बिंदुओं के आधार पर उन्होंने जो नाटक रचे हैं वह भारतीय संस्कृति, सभ्यता को नए रूप में व्याख्यायित करते हैं। उनकी प्रमुख विशेषता यह है कि वे स्वयं नाटक के पात्र बनकर उस पात्र में जीवंतता प्रदान करते हैं, इसलिए वे अन्य नाटककारों से अलग सिद्ध होते हैं।

दया प्रकाश सिन्हा के कुल 15 नाटक हैं और उनके सभी नाटकों का कथानक एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। उनके कुछ नाटक भारतीय राजाओं के इतिहास का समग्र चित्रण प्रस्तुत करते हैं तो उनके कई नाटक स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं के यथार्थ दस्तावेज की तरह पाठकों के सामने आते हैं। कुछ नाटक पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से उत्पन्न समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में जीवन-मूल्य में परिवर्तन आ गया है। आज का परिवेश ही ऐसा बन गया है कि पुराने का त्याग और नये का स्वीकार, आँख मूँदकर किया जा रहा है। आज समाज में स्थिति यह है कि हमारी पुरातन परंपराएँ, मान्यताएँ, आदर्श और मूल्य विघटित हो रहे है और उनके स्थान पर नवीन मूल्यों का निर्माण हो रहा है।

वैश्वीकरण के इस दौर में सांस्कृतिक मूल्यों का आदान-प्रदान होना कोई बुरी बात नहीं है। दूसरों की अच्छाई ग्रहण कर हमारी संस्कृति समृद्धशाली ही बनती है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित वे मूल्य जो हमारे विकास की गति को अवरुद्ध करे, हमारी संस्कृति को विनाश के द्वार पर ले जाए, उसे ग्रहण करना अनुचित जान पड़ता है।

शोध विषय की आवश्यकता–

दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में सामजिक, राजनैतिक व्यवस्था, स्त्री के विविध रूप, शिक्षा व्यवस्था का चित्रण किस प्रकार हुआ है और ये नाटक सामाजिक बदलाव में कितने समर्थ हैं? इन सभी प्रश्नों पर विचार किया जाएगा। इनकी कृति सम्राट-अशोक के लिए "साहित्य अकादमी पुरस्कार" मिला और हाल में ही उनके इस नाटक को लेकर पर्याप्त विवाद भी हुआ है। इस विवाद के कारण और उस से जुड़ी प्रमाणिकता की पड़ताल बाद में की जाएगी।

प्रस्तावित विषय पर अभी तक किसी भी विश्वविद्यालय में शोध-कार्य समपन्न नहीं हुआ है, अतः प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य की उपादेयता है।

शोध विषय का महत्व–

दया प्रकाश सिन्हा साठोत्तरी युग के प्रमुख नाटककार रहे हैं। उन्हें राष्ट्रीय, ऐतिहासिक तथा सामाजिक विषमताओं का ज्ञान है। इस कारण उन्होंने तीन बिंदुओं को आधार बनाकर नाटकों की रचना की है। वे अपने नाटकों में सभ्यता और संस्कृति को नए रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कुल 15 नाटक लिखे हैं, प्रत्येक नाटक का अपना अलग-अलग कथ्य है तथा ये नाटक मंचन की दृष्टि से भी सफल रहे हैं। वे अपने नाटकों में न केवल समस्याओं का वर्णन करते हैं बल्कि उनका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। उनके प्रमुख नाटक हैं– साँझ-सबेरा, मन के भँवर, पंचतंत्र लघु नाटक, अपने अपने दाँव, दुश्मन, मेरे भाई मेरे दोस्त, हास्य एकांकी, इतिहास चक्र, ओह अमेरिका, कथा एक कंस की, सादर आपका, सीढियाँ, इतिहास-वृत्त नाटक, रक्त-अभिषेक, सम्राट-अशोक।

- **साँझ-सबेरा**– इस नाटक में दो पीढ़ी के बीच संघर्ष तथा परंपरा और आधुनिकता में टकराहट का वर्णन है। यह नाटक समकालीन परिदृश्य में सामाजिक जीवन का परिदृश्य प्रस्तुत करता है।
- **मन के भँवर**– यह नाटक मन के विकार स्व उत्पन्न होनेवाली विभिन्न मनोदशाओं को प्रस्तुत करता है जिसमें मनोवैज्ञानिक रूप से आधुनिक मानव की जीवनदशा को प्रस्तुत किया गया है।
- **पंचतंत्र लघुनाटक**– यह बाल-मनोविज्ञान पर आधारित बाल नाटक है जिसमें मुख्य रूप से पंचतंत्र की कथा को अभिनय रूप में प्रस्तुत किया है।
- **अपने-अपने दाँव**– आधुनिक समाज की मनोवृत्ति किस प्रकार से धनलोलुपता में डूब गयी कि मनुष्य किसी भी कार्य को केवल अपने स्वार्थ और लोभ के लिए करता है। वर्तमान समय में यह नाटक वास्तविक समाज का प्रतिबिंब है।

- **दुश्मन**– यह नाटक हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक है। दुश्मनी एक ऐसा अवगुण है जिसको जितना आगे बढ़ाएंगे वह उतना और आगे बढ़ती ही जाएगी, समाज का नुकसान करती है साथ ही व्यक्ति अपने बनाये जाल में ही उलझकर रह जाता है।
- **मेरे भाई मेरे दोस्त**– यह नाटक हिन्दू-मुस्लिम की समस्या (धर्म-निरपेक्ष हिंदुस्तान और इस्लामिक राज्य पाकिस्तान का वैचारिक संघर्ष) पर आधारित है।
- **इतिहास चक्र**– यह नाटक समाज की जीवन, परिस्थिति, सामाजिक, राजनितिक ढाँचा को प्रस्तुत करता है। राजा और राजनितिक सत्ताधारी को प्रतीक के रूप में सभी राजनेता, पूँजीपति, नौकरशाही, बुद्धिजीवी, गणिका, अनामी आदि को आज के सन्दर्भ में जोड़कर देखा गया है। इस नाटक में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच का संघर्ष को दिखाया गया है।
- **ओह अमेरिका**– श्री सिन्हा ने विदेशी संस्कृति के अंधानुकरण की समस्या के निरंतर बढ़ते संत्रास को इस नाटक में दिखाने का प्रयास किया है।
- **कथा एक कंस की**– इस नाटक में नाटककार ने पौराणिक और आधुनिक का नया स्वरुप प्रस्तुत किया है जिसमें दया प्रकाश सिन्हा ने नाटक के कंस के बचपन से विद्रोही होने के कारण एवं परिस्थिति का आकलन किया है।
- **सादर आपका**– इस नाटक में नाटककार ने आधुनिक शहरी जीवन में रहनेवाले परिवार का जीवन चित्रण प्रस्तुत किया है। किस प्रकार लोग शहर में रहते हैं, जहाँ पति-पत्नी में तनाव है, उनके बीच रिश्ते केवल मजबूरी में निभ रहे हैं। घर में बेटी का व्यवहार ठीक नहीं है पत्नी परपुरुष के प्रति आकर्षित रहती है, इस प्रकार की समस्या शहर में निरंतर चल रही है।

- **सीढ़ियाँ**– इस नाटक में मोहम्मदशाह रंगीला के शासन के अंतर्गत मुगल शासन के अंतिम चरण में व्याप्त भ्रष्टाचार, नैतिक अवमूल्यन और सामजिक पतन का चित्रण हमारे आधुनिक, सामजिक अवमूल्यन की ओर संकेत करता है।
- **इतिहास**– इस नाटक में भारतीय स्वंत्रता संग्राम का चित्रण मिलता है। 1857 से लेकर 1947 तक की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख मिलता है। यह वृत्त नाटक है।
- **रक्त-अभिषेक**– इस नाटक में राज अधिकार और राज्य की सुरक्षा के प्रति सेनापति पुष्यमित्र शुंग के राजधर्म 'कर्तव्य' का उल्लेख किया गया है।
- **सम्राट-अशोक**– इस नाटक में नाटककार ने 'सम्राट-अशोक' के ऐसे रूप-रंग और छवियों को उकेरा है कि वह सुदूर अतीत का अशोक न होकर आज के किसी भी राजनीतिक, प्रशासक अथवा शासक की सहज ही प्रतिबिंब जान पड़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दया प्रकाश सिन्हा के लगभग सभी नाटकों में आधुनिक समाज की विसंगति, मानवीय संबंधों की जटिलता, स्थितियों की विडंबना, स्त्री-बोध, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, सत्ता का चरित्र आदि की अभिव्यक्ति हुई है। नाटककार ने अपने नाटकों में ऐतिहासिक, पौराणिक, मिथकीय कथाओं के प्रतीक के रूप में आधुनिक समाज की विसंगति को दिखाने का प्रयास किया है।

पूर्वकृत शोध-कार्य–

वर्तमान समय में इस विषय पर कोई शोध-कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। प्रस्तावित विषय– "दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में युगबोध" पूर्णत: मौलिक एवं नवीन कार्य है। इनके निम्न नाटकों पर कार्य हुए हैं जो निम्न हैं–

1. शोधार्थी– मोहना टी., पर्यवेक्षक– नामदेव एम. गौड़ा, दया प्रकाश सिन्हा का नाटक साहित्य एक अनुशीलन, मैसूर विश्वविद्यालय, 2018

2. **शोधार्थी– शशि एस.जे. सजीथ, पर्यवेक्षक– सुर्वमन्यम नामबोथिर्य वी.के., दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में संवेदना और शिल्प विधान, केरल विश्वविद्यालय, 2010**

आधार ग्रन्थ सूची–

1. साँझ-सबेरा, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, संस्करण-2012, नई दिल्ली- 110002
2. मन के भँवर, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2015
3. अपने अपने दाँव, दया प्रकाश सिन्हा, गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2010
4. मेरे भाई मेरे दोस्त, दया प्रकाश सिन्हा, विद्या प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2003
5. दुश्मन, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रकाशन- 2015
6. इतिहास चक्र, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002, संस्करण द्वितीय- 2015
7. ओह अमेरिका, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2000
8. कथा एक कंस की, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2008

9. सादर आपका, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2011
10. सीढ़ियाँ, दया प्रकाश सिन्हा, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीटयुशनल एरिया लोदी रोड, नई दिल्ली, संस्करण- 2011
11. इतिहास (वृत्त नाटक), दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2008
12. रक्त अभिषेक, दया प्रकाश सिन्हा, सामायिक प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2011
13. सम्राट अशोक, दया प्रकाश सिन्हा, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 2015
14. नाटक : मेरी दृष्टि में, दया प्रकाश सिन्हा, नोएडा, मार्च- 2018
15. मेरे नाटक, दया प्रकाश सिन्हा, नवंबर- 2017

शोध की परिकल्पना–

प्रस्तावित शोध-प्रबंध में दयाप्रकाश सिन्हा के नाट्य साहित्य की गहन समीक्षा की योजना है। यह हिंदी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में अधुनातन प्रयोगों की दिशा में सूत्र उपलब्ध कराएगा। साठोत्तरी हिंदी नाटक और रंगमंच में कथ्य व शिल्प के स्तर पर आए हुए परिवर्तनों को दयाप्रकाश सिन्हा के नाट्य लेखन के परिप्रेक्ष्य में समझने की दिशा में यह शोध महत्वपूर्ण बिंदु सिद्ध होगा। हिंदी नाट्य-लेखन के इतिहास के मूल्यांकन द्वारा यह बताने का प्रयास रहेगा कि हिंदी नाटक और रंगमंच की दिशा में नए क्षेत्र और संभावनाएँ क्या बनती है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध में समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। तथ्यों के संकलन, संयोजन एवं विश्लेषण के लिए आगमन और निगमन पद्धति का उपयोग अपेक्षित है। आगमन पद्धति से जहाँ तथ्यों का संकलन संभव हो सकेगा वहीं निगमन पद्धति से शोध के वैज्ञानिक आयामों को एक नयी दिशा मिल सकेगी।

शोध अध्यायों का विभाजन–

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय	:	दया प्रकाश सिन्हा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
द्वितीय अध्याय	:	हिंदी के समकालीन नाटककारों की परंपरा में दयाप्रकाश सिन्हा का स्थान।
तृतीय अध्याय	:	दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में युगबोध।
चतुर्थ अध्याय	:	दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में रंगमचीयता।
पंचम अध्याय	:	दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों का शिल्प-वैशिष्ट्य।

उपसंहार

परिशिष्ट

प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथों की सूची–

1. नाटककार दया प्रकाश सिन्हा, समीक्षायण, रविंद्रनाथ बहोरे, संजय प्रकाशन, दरियागंज, अंसारी रोड, जे० एम० डी० हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण– 2022

2. हिंदी नाट्य शिल्प : बदलती रंग दृष्टि, डा० देवेन्द्र कुमार गुप्ता, पीयूष प्रकाशन, दिल्ली–110094, प्रथम संस्करण– 2005

3. रंगमंच और नाटक की भूमिका, डा० लक्ष्मीनारायण लाल, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण– 1965
4. भारतेंदु कालीन नाट्य साहित्य, गोपीनाथ तिवारी, हिंदी भवन, 312, रानी मंडी, इलाहाबाद, जालंधर
5. हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, डॉ० सोमनाथ गुप्त, इन्द्र चन्द्र नारंग, हिंदी भवन, इलाहाबाद, संस्करण– 1948
6. हिंदी नाटक का उदभव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली– 6, संस्करण– 1970
7. भारतीय राष्ट्रवाद एवं आर्य समाज आन्दोलन, विजेन्द्र पाल सिंह, विभु प्रकाशन, साहिबाबाद, संस्करण– 1977
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, भारतेंदु भवन चंडीगढ़
9. हिंदी नाटक की भूमिका, लक्ष्मीनारायण लाल, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण– 1965
10. भारतेंदु की विचारधारा, लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय , साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, तृतीय संस्करण – 1965
11. भारतेंदु का गद्य साहित्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ० कपिलदेव दुबे
12. आलोचक भारतेंदु, श्री निवास त्यागी, देव प्रकाशन, दिल्ली– 110053
13. नया साहित्य : नए प्रश्न, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
14. आधुनिक हिंदी नाटक, डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1998
15. काव्यकला तथा अन्य निबंध, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
16. साठोत्तरी हिंदी नाटकों की सामाजिक चेतना का अनुशीलन, डॉ० जयश्री शुक्ल

17. हिंदी नाटकों का शिल्प विधि का विकास, डॉ० शान्ति मलिक, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण– 1971
18. रंग शिल्पी, मोहन राकेश, डॉ० नरनारायण राय, कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1991
19. मानवीय मूल्य और साहित्य, डॉ० धर्मवीर भारती
20. परम्परा और आधुनिकता में टकराहट, डॉ० हरीश कुमार सेठी
21. बदलती मानसिकता के शाश्वत प्रश्न का रूपायन, डॉ० पूरनचंद टंडन, संस्करण– 2022
22. मिथक और साठोत्तरी नाटक, डॉ० कपिलदेव महतो
23. हिंदी नाटक रंग शिल्पदर्शन, विमल गौतम
24. दया प्रकाश सिन्हा रचनाधर्मिता, ए. अच्युतन, परमेश्वरी प्रकाशन, बी– 109, प्रीत विहार, दिल्ली– 110051, प्रथम संस्करण– 1989
25. हिंदी नाटक, डॉ० बच्चन सिंह राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली– 110051, प्रथम संस्करण– 1989
26. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण– 1978

शोध निर्देशिका :

डा० रीता दुबे

सहायक प्राध्यापक
सी० एम० कॉलेज, हिंदी विभाग
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी :

एकता प्रियदर्शिनी

पिता- उदय प्रकाश
ग्राम- मनियरवा, पो०+थाना- खजौली
जिला – मधुबनी
पैट क्रमांक - E2209058

शोध-सारांश

हिंदी नाट्य परंपरा में दया प्रकाश सिन्हा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके नाटकों में ऐतिहासिक, राजनीतिक, पौराणिक, मिथकीय कथाओं के माध्यम से वर्तमान समाज के विघटन, संबंधों की जटिलता, स्त्री-बोध, संस्कृति का ह्रास जैसे मुद्दों को पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास किया गया है। उनकी रचना समाज और मानव के संबंधों में आई गिरावट को भी रेखांकित करती है। उन्होंने नाट्य साहित्य द्वारा संस्कृति एवं इतिहास की पुनर्व्याख्या मानवीय एवं सामाजिक हितों में किया है। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध-विषय अत्यन्त सारगर्भित एवं वैज्ञानिक मूल्य से अन्वेषित है।

शोध निर्देशिका :

डा० रीता दुबे
सहायक प्राध्यापक
सी० एम० कॉलेज, हिंदी विभाग
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी :

एकता प्रियदर्शिनी
पिता- उदय प्रकाश
ग्राम- मनियरवा, पो०+थाना- खजौली
जिला – मधुबनी
पैट क्रमांक - E2209058